अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 संख्या 91 श्री विजय पुरम, रविवार, 05 अप्रैल 2026 web: dt.andamannicobar.gov.in 2.00 रूपए

लिटिल अण्डमान प्रो से भारत के सर्फिंग सीज़न की शुरुआत, एशियाई खेलों में पदार्पण की तैयारी

सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई), जो भारत में सर्फिंग खेल की शासी संस्था है, ने 9 से 12 अप्रैल तक आयोजित होने वाली भारत की 2026 सर्फिंग सीज़न की शुरुआत–"लिटिल अण्डमान प्रो 2026–नेशनल सर्फ एवं एसयूपी चैंपियनशिप"–की घोषणा की है। एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, लिटिल अण्डमान प्रो 2026 भारतीय सर्फिंग के बहुप्रतीक्षित सीज़न की शुरुआत करेगा, जो इसी वर्ष जापान में होने वाले एशियाई खेल 2026 में भारत के पहले अभियान से ठीक पहले आयोजित किया जा रहा है।

चार दिवसीय इस भव्य सर्फिंग आयोजन में भारत के शीर्ष सर्फर और स्टैंड–अप पैडल खिलाड़ी अण्डमान द्वीपसमूह के मनमोहक बटलर बे तट पर सर्वोच्च सम्मान के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। यह प्रतियोगिता देश के सबसे स्वच्छ और अब तक कम विकसित तटीय स्थलों में से एक पर पहली बार प्रतिस्पर्धात्मक सर्फिंग को लेकर आएगी।

अण्डमान तथा निकोबार पर्यटन द्वारा प्रस्तुत और सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित इस आयोजन में देशभर के शीर्ष सर्फर सीनियर वर्ग में सर्फिंग और स्टैंड–अप पैडल (एसयूपी) दोनों विधाओं में भाग लेंगे। प्रतियोगिता के लिए पंजीकरण पहले ही शुरू हो चुके हैं। टीटी ग्रुप सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया का आधिकारिक प्रायोजक बना है।

यह आयोजन भारतीय सर्फिंग के लिए एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक वर्ष में विशेष महत्व रखता है। भारत ने 2024 एशियाई सर्फिंग चैंपियनशिप में पहली बार एशियाई खेलों का कोटा हासिल किया और 2025 में महाबलीपुरम में हुए संस्करण में शानदार प्रदर्शन करते हुए 2026 एशियाई खेल (आइची–नागोया, जापान) के लिए पुरुष और महिला वर्ग में दो–दो सहित कुल चार स्थान सुनिश्चित किए।

सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष अरुण वासु ने कहा, "यह भारतीय सर्फिंग के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। इस वर्ष एशियाई खेलों में भारत की सर्फिंग की शुरुआत को देखते हुए, लिटिल अण्डमान जैसे विश्वस्तरीय स्थान से राष्ट्रीय सीज़न की शुरुआत करना हमारे उस संकल्प को दर्शाता है कि हम इस खेल को भारत के व्यापक तटीय क्षेत्रों तक ले जाना चाहते हैं। हम अपने प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को विभिन्न परिस्थितियों में अधिक प्रतिस्पर्धा का अवसर देने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। सर्फिंग एक सामुदायिक खेल है और अण्डमान तक अपने विस्तार के साथ हम स्थानीय समुदायों के लिए अवसर पैदा

करना, युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना और भारत को वैश्विक सर्फिंग में एक मजबूत दावेदार के रूप में स्थापित करना चाहते हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय सर्फरों की प्रगति बेहद उत्साहजनक रही है। एशियाई खेलों के लिए पहली बार कोटा हासिल करने से लेकर महाद्वीपीय चैंपियनशिप में पदक जीतने तक, हम सतत ज़मीनी विकास और संरचित प्रतियोगिताओं के सकारात्मक परिणाम देख रहे हैं।"

लिटिल अण्डमान प्रो 2026 का आयोजन बटलर बे में होगा, जिसे भारत के सबसे संभावनाशील सर्फिंग स्थलों में से एक माना जाता है। मुख्यभूमि के कई बीच ब्रेक के विपरीत, बटलर बे का रीफ ब्रेक लंबी और साफ लहरें उत्पन्न करता है, जिससे सर्फर अधिक तकनीकी कौशल और लंबे राइड का प्रदर्शन कर सकते हैं। यह इसे उच्च स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए आदर्श बनाता है।

अधिकांश भारतीय सर्फर जो आमतौर पर बीच ब्रेक पर प्रशिक्षण लेते हैं, उनके लिए रीफ परिस्थितियों में प्रतिस्पर्धा करना तकनीकी कौशल को निखारने और प्रतिस्पर्धात्मक अनुभव को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। इस

शेष पृष्ठ 4 पर

संदेश

63वें राष्ट्रीय समुद्री दिवस के शुभ अवसर पर, सभी नाविकों, समुद्री पेशेवरों और समुद्री क्षेत्र के हितधारकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई।

इस वर्ष का विषय, "समुद्री भारत–प्रगति को सशक्त बनाना," राष्ट्रीय विकास को गति देने, व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने और वैश्विक साझेदारियों को बढ़ावा देने में समुद्री क्षेत्र की परिवर्तनकारी भूमिका को सटीक रूप से रेखांकित करता है। अपनी अनूठी भौगोलिक स्थिति के कारण, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह भारत के समुद्री परिदृश्य में रणनीतिक महत्व रखते हैं। हमारी समृद्ध समुद्री विरासत, अंतर्निहित भौगोलिक लाभों के साथ मिलकर, हमें सतत विकास, नीली अर्थव्यवस्था और समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने वाली पहलों में अग्रणी बनाती है।

समुद्री क्षेत्र लंबे समय से व्यापार और वाणिज्य का आधार रहा है और प्रौद्योगिकी में नवाचार, आधुनिक बुनियादी ढांचे और पर्यावरणीय स्थिरता पर बढ़ते ज़ोर के माध्यम से निरंतर प्रगति कर रहा है। दूरदर्शी नीतियों और हमारे नाविकों तथा समुद्री कार्यबल के अटूट समर्पण के कारण भारत का एक अग्रणी वैश्विक समुद्री केंद्र के रूप में निरंतर उभरना वास्तव में उत्साहजनक है।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर, आइए हम नवाचार को बढ़ावा देने, समुद्री क्षमताओं को बढ़ाने और अपने नाविकों की सुरक्षा, सम्मान और कल्याण सुनिश्चित करने के प्रति अपनी सामूहिक प्रतिबद्धता की पुष्टि करें। मैं सभी हितधारकों से आह्वान करता हूँ कि वे एक लचीले, टिकाऊ और भविष्य के लिए तैयार समुद्री भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में निकट समन्वय से कार्य करें।

मैं एक बार फिर इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में अथक योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। आशा है कि यह दिन समुद्री क्षेत्र में हमारे प्रयासों के प्रति नए संकल्प, गौरव और उत्कृष्टता को प्रेरित करेगा।

ह.
(एडमिरल डी.के. जोशी)
पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एनएम, वीएसएम (अ.प्रा.)
उप राज्यपाल
अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
एवं उपाध्यक्ष, द्वीप विकास एजेंसी

संदेश

5 अप्रैल, 2026 को 63वें राष्ट्रीय समुद्री दिवस के अवसर पर, मैं सभी नाविकों, समुद्री पेशेवरों और हितधारकों को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ। इस वर्ष का विषय, "समुद्री भारतः प्रगति को सशक्त बनाना", भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, वैश्विक व्यापार को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने में समुद्री क्षेत्र के अपार योगदान को उजागर करता है। अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के लिए, समुद्री संपर्क वह जीवन रेखा है जो हमारी अर्थव्यवस्था को बनाए रखती है, आजीविका का समर्थन करती है और हमारे द्वीपों को मुख्यभूमि और दुनिया से जोड़ती है।

हमारे द्वीप हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, जो बंदरगाहों, जहाज़रानी, मत्स्य पालन, पर्यटन और नीली अर्थव्यवस्था के विकास के लिए व्यापक अवसर प्रदान करते हैं। यह अनिवार्य है कि हम अपनी समृद्ध समुद्री जैव विविधता को संरक्षित करते हुए, इस क्षमता का सतत और समावेशी तरीके से उपयोग करना जारी रखें। इस महत्वपूर्ण दिन पर, मैं हमारे नाविकों और समुद्री कार्यबल के समर्पण, साहस और दृढ़ता को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी सुरक्षित और कुशल समुद्री संचालन सुनिश्चित होता है।

मैं सभी को सार्थक और प्रेरणादायक राष्ट्रीय समुद्री दिवस की शुभकामनाएँ देता हूं।

(बिष्णु पद राय)
सांसद
अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह

सांसद ने हवाई यात्रियों के लिए बैगेज सीमा बढ़ाने की मांग की

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय सांसद श्री बिष्णु पद राय ने भारत सरकार के नागरिक उड्डयन मंत्री श्री किंजरापु राममोहन नायडू से द्वीपों और मुख्यभूमि के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए बैगेज (सामान) की सीमा बढ़ाने तथा अनुमेय सीमा के भीतर कम से कम दो बैग ले जाने की अनुमति देने का अनुरोध किया है। सांसद कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार अपने पत्र में सांसद ने द्वीपवासियों को होने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए श्री विजय पुरम–मुख्यभूमि मार्गों के लिए बैगेज सीमा 15 किलोग्राम से बढ़ाकर 25 किलोग्राम करने की अपील की है।

दक्षिण अण्डमान में छात्रों के लिए जीवन रक्षक स्वास्थ्य प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

दक्षिण अंडमान ज़िला स्वास्थ्य समिति ने सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों को सुदृढ़ करने की अपनी निरंतर प्रतिबद्धता के तहत राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के अंतर्गत एक व्यापक प्रशिक्षण पहल शुरू की है। इस कार्यक्रम का शुभारंभ आज राजकीय माध्यमिक विद्यालय, दिलानीपुर में दक्षिण अण्डमान की उपायुक्त श्रीमती पूर्वा गर्ग (आईएएस) के पर्यवेक्षण में किया गया। यह कार्यक्रम कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है, जिसमें जिले के 39 सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र शामिल होंगे। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को बेसिक लाइफ सपोर्ट (बीएलएस) तथा

बुनियादी स्वास्थ्य संकेतकों की निगरानी का प्रशिक्षण प्रदान करना है। कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर शिक्षा विभाग के उप निदेशक/कार्यालय प्रमुख, परिवार कल्याण के उप निदेशक, आपदा प्रबंधन (स्वास्थ्य) के उप निदेशक एवं राज्य नोडल अधिकारी तथा ज़िला स्वास्थ्य समिति, दक्षिण अण्डमान के ज़िला कार्यक्रम प्रबंधक उपस्थित रहे। दिलानीपुर विद्यालय के प्रभारी उप–प्रधानाचार्य, प्रशिक्षक डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ भी इस अवसर पर मौजूद रहे। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को जीवन रक्षक कौशल और आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया देने की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना है। प्रशिक्षण सत्र आपदा प्रबंधन (स्वास्थ्य), राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके), ज़िला स्वास्थ्य समिति (दक्षिण अण्डमान) की स्वास्थ्य सूचना एवं सम्पर्क (एचआईसी) इकाई तथा शहरी स्वास्थ्य केंद्र, दिलानीपुर की विशेषज्ञ टीमों द्वारा आयोजित किए गए। प्रशिक्षण में लाइव प्रदर्शन, व्यावहारिक अभ्यास और सहभागितापूर्ण गतिविधियों के माध्यम से कुछ प्रमुख विषयों पर जानकारी दी गई। बेसिक लाइफ सेविंग स्किल्स के तहत आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रक्रिया का प्रशिक्षण, जिसमें कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर) का प्रदर्शन और अभ्यास शामिल है। साथ ही, आपात स्थितियों में 102 एम्बुलेंस सेवा के समय पर उपयोग के

शेष पृष्ठ 4 पर

संदेश

5 अप्रैल, 2026 को 63वें राष्ट्रीय समुद्री दिवस के अवसर पर, मैं सभी नाविकों, समुद्री पेशेवरों और जहाज़रानी क्षेत्र के हितधारकों को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देना चाहता हूँ। इस वर्ष का चुना गया विषय, "समुद्री भारत–प्रगति को सशक्त बनाना," आर्थिक विकास को गति देने, संपर्क को मजबूत करने और सतत विकास को बढ़ावा देने में समुद्री क्षेत्र के महत्वपूर्ण योगदान को खूबसूरती से दर्शाता है।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के लिए, जहाज़रानी सेवाएं अंतर–द्वीपीय संपर्क की जीवनरेखा हैं, जो यात्रियों, माल और आवश्यक वस्तुओं के परिवहन के लिए अपरिहार्य हैं। अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन का जहाज़रानी विभाग समुद्री बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने, बेड़े के संचालन को उन्नत करने और हमारे द्वीपों में जहाज़रानी सेवाओं में सुरक्षा, विश्वसनीयता और दक्षता के उच्चतम मानकों को सुनिश्चित करने के अपने मिशन के प्रति अडिग है।

इस महत्वपूर्ण दिवस पर, मैं हमारे नाविकों, समुद्री इंजीनियरों, बंदरगाह कर्मचारियों और उन सभी कर्मियों के समर्पण और व्यावसायिकता के प्रति अपनी गहरी सराहना व्यक्त करता हूँ, जो अक़्सर चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी हमारी समुद्री सेवाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए अथक प्रयास करते हैं।

आइए हम समुद्री क्षमताओं को मजबूत करने, सेवा वितरण में सुधार करने और प्रगतिशील एवं लचीले समुद्री भारत की परिकल्पना में योगदान देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नवीकृत करें। मैं सभी संबंधित पक्षों को राष्ट्रीय समुद्री दिवस की सफल और प्रेरणादायक शुभकामनाएँ देता हूँ।

ह.
चंचल यादव (आईएएस)
आयुक्त–सह–सचिव (जहाज परिवहन),
अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन

इंडिया स्किल्स राष्ट्रीय प्रतियोगिता 2025–26 में अण्डमान–निकोबार टीम का शानदार प्रदर्शन

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

यह अत्यंत गर्व और प्रेरणा का विषय है कि अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की टीम के क्षेत्रीय विजेताओं ने प्रतिष्ठित इंडिया स्किल्स राष्ट्रीय प्रतियोगिता 2025–26 में अपनी असाधारण प्रतिभा का प्रदर्शन किया। यह प्रतियोगिता 29 मार्च, 2026 से 2 अप्रैल, 2026 तक ग्रेटर नोएडा (उत्तर प्रदेश) स्थित इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में आयोजित की गई, जबकि कुछ प्रतियोगिताएं कर्नाटक के रमणगरा ज़िले के मगड़ी स्थित गवर्नमेंट टूल रूम एंड ट्रेनिंग सेंटर तथा गुजरात के वडनगर स्थित एल एंड टी कंस्ट्रक्शन स्किल्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में आयोजित हुईं।

द्वीपसमूह से 13 प्रतिभाशाली प्रतिभागियों की टीम ने 8 विभिन्न कौशल श्रेणियों में भाग लिया और

उत्कृष्टता, दृढ़ संकल्प तथा कौशल विकास की सच्ची भावना का परिचय दिया। देशभर के सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों के बीच प्रतिस्पर्धा करते हुए टीम ने अपने शानदार प्रदर्शन से द्वीपसमूह का नाम गौरवान्वित किया।

अण्डमान तथा निकोबार टीम की उपलब्धियां:

- प्लास्टरिंग एंड ड्राईवॉल सिस्टम–कुमार राज बिस्वास: रजत पदक

शेष पृष्ठ 4 पर

टुसनाबाद में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ अंबेडकर मेले का शुभारंभ

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

बहुप्रतीक्षित अंबेडकर मेला 2026, पांच दिवसीय सांस्कृतिक एवं सामाजिक आयोजन, का शुभारंभ 1 अप्रैल को दक्षिण अण्डमान के टुसनाबाद जंक्शन स्थित ई–पटवारखाना के पास फ्लडलाइट ग्राउंड में किया गया। यह आयोजन ग्राम पंचायत मीठाखाड़ी और यूथ क्लब ओग्राब्राज के तत्वावधान में आयोजित हो रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर को पुष्पांजलि अर्पित कर उनके अमूल्य योगदान को श्रद्धांजलि देते हुए की गई।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पर्यटन निदेशक श्री विनायक चामाडिया (आईएएस) ने ग्राम पंचायत मीठाखाड़ी के इस सार्थक और समावेशी आयोजन की सराहना की। मुख्य अतिथि, अन्य अधिकारियों एवं पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने विभिन्न विभागों एवं अन्य स्टॉलों का भी अवलोकन किया, जहां सरकारी योजनाओं, स्थानीय उत्पादों और सामुदायिक प्रयासों को प्रदर्शित किया गया। मेले में बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही, जिससे इसे व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ। ग्राम पंचायत मीठाखाड़ी के प्रधान मोहम्मद शफीक़ ने उपस्थित जनसमूह का स्वागत किया और मेले के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर स्थानीय प्रतिभाओं द्वारा प्रस्तुत नृत्य एवं गायन कार्यक्रमों ने दर्शकों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय के छात्रों के लिए आयोजित चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए गए। यह प्रतियोगिताएं ग्राम पंचायत मीठाखाड़ी, यूथ क्लब ओग्राब्राज तथा बोधिसत्व अंबेडकर सांस्कृतिक संघ, गोलघर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई थीं, जिनका उद्देश्य युवाओं में रचनात्मकता और जागरूकता को बढ़ावा देना था। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार कार्यक्रम का समापन मीठाखाड़ी क्षेत्र के ज़िला परिषद सदस्य पी.ए. शर्फुद्दीन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। अंबेडकर मेला 2026 का समापन 5 अप्रैल, 2026 को होगा, जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक, शैक्षणिक और जागरूकता संबंधी गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा।

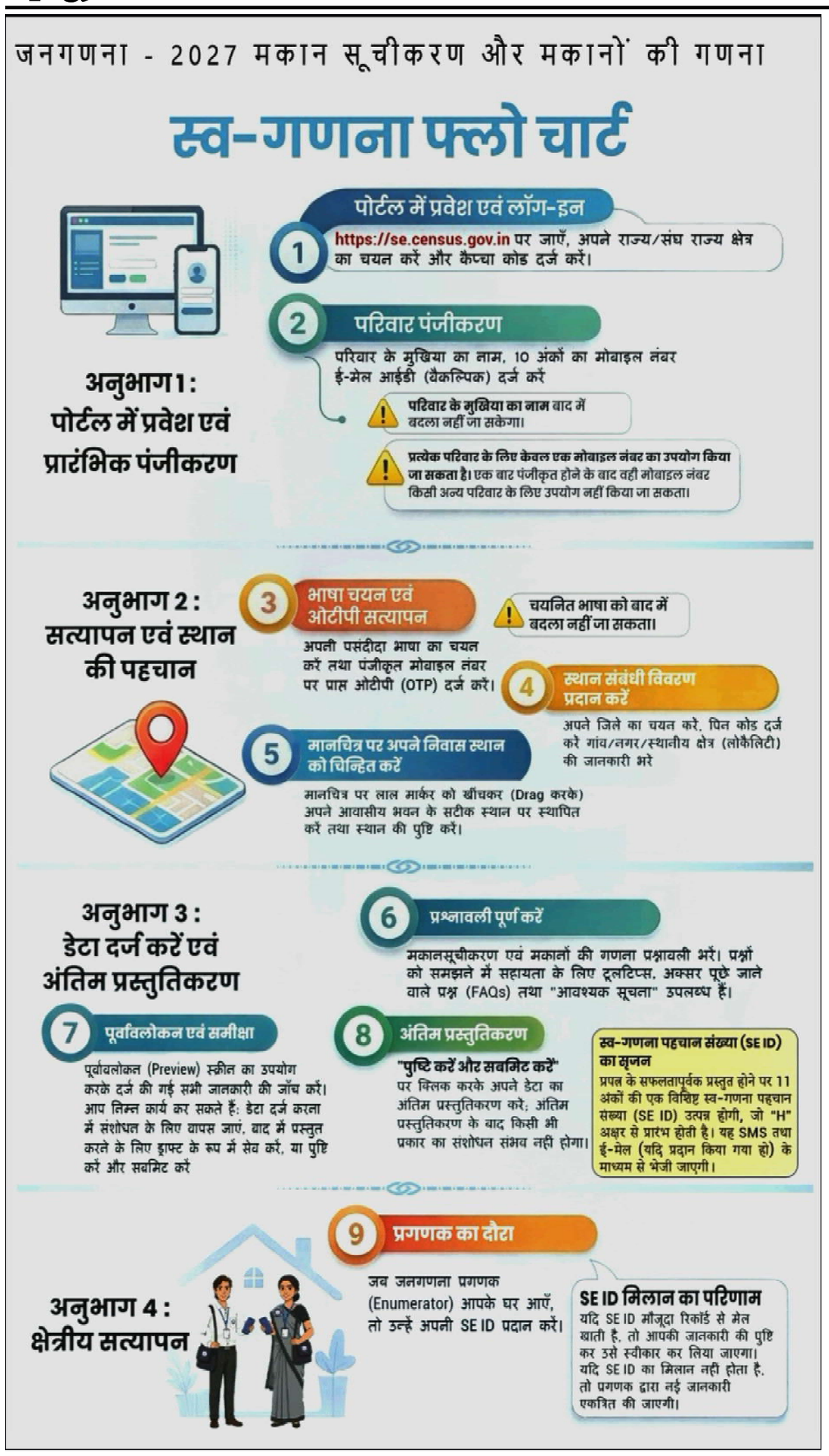

जनगणना 2027 के लिए स्व–गणना को बढ़ावा देने हेतु जागरूकता अभियान शुरू

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

जनगणना 2027 के अंतर्गत आम जनता को स्व–गणना के लिए प्रोत्साहित करने हेतु जागरूकता अभियान शुरू किए गए हैं। जनगणना 2027 के प्रथम चरण, अर्थात् मकान सूचीकरण एवं आवास जनगणना के तहत, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में 1 अप्रैल से 15 अप्रैल, 2026 तक स्व–गणना की प्रक्रिया संचालित की जा रही है। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस अभियान में बच्चों की भागीदारी उत्साहवर्धक है और वे जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। श्री विजय पुरम स्थित मरीना पार्क में रंग भरने की गतिविधियों के माध्यम से अनेक बच्चों ने जनगणना 2027 की इस डिजिटल पहल में सक्रिय रूप से भाग लिया।

मध्योत्तर अण्डमान ज़िला पुलिस ने सैडल पीक ट्रेक के माध्यम से नशा–मुक्त जीवन का संदेश दिया

मायाबंदर, 4 अप्रैल

उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िला पुलिस ने 3 अप्रैल, 2026 को अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के सर्वोच्च शिखर सैडल पीक तक ट्रेकिंग अभियान का आयोजन किया। यह पहल नशा–मुक्त समाज के निर्माण और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने की उनकी निरंतर प्रतिबद्धता का हिस्सा है। 27 पुलिसकर्मियों की एक टीम ने 732 मीटर ऊँचे इस शिखर को सफलतापूर्वक फतह किया, जिससे उनके दृढ़ संकल्प, टीम वर्क और शारीरिक सहनशक्ति का परिचय मिला। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस पहल का उद्देश्य युवाओं और आम जनता को प्रेरित करना था कि वे फिटनेस, मानसिक मजबूती और बाहरी गतिविधियों को नशे के दुष्प्रभावों के सकारात्मक विकल्प के रूप में अपनाएं।

पेनकाक सिलाट में द्वीपों के खिलाड़ियों ने जीते 6 पदक

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह पेनकाक सिलाट एसोसिएशन (पीएसएएएनआई) ने गुजरात में 31 मार्च से 1 अप्रैल, 2026 तक आयोजित अस्मिता राष्ट्रीय पेनकाक सिलाट लीग में शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 6 पदक (एक स्वर्ण और पांच कांस्य) अपने नाम किए। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार पी. धनिस्ता ने स्वर्ण पदक जीतकर द्वीपसमूह का नाम रोशन किया, जबकि दृष्टि सिंह, सुदिक्षा दास, एंजल एलेटा, त्रिशा सुनील और त्रिशा देवी ने कांस्य पदक हासिल किए। खिलाड़ियों ने टांडिंग (फाइट) और रेगु (इवेंट) दोनों श्रेणियों में उत्कृष्ट कौशल और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया।

अण्डमान–निकोबार के दो युवा शतरंज खिलाड़ियों ने हासिल की फिडे रेटिंग

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के लिए एक और गर्व का क्षण तब आया जब दो होनहार युवा शतरंज खिलाड़ियों ने अपनी फिडे रेटिंग हासिल कर अपने खेल कॅरियर में महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज़ की। एएफएम सॉ जिन्सन सैमुअल ने 1633 की फिडे रेटिंग प्राप्त की, जबकि एसीएम अग्रता सिंह ने नई दिल्ली में आयोजित फिडे रेटेड टूर्नामेंट में भाग लेते हुए 1531 की रेटिंग के साथ अपना खाता खोला। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार दोनों खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए यह उपलब्धि हासिल की, जिसकी पुष्टि फिडे (विश्व शतरंज महासंघ) द्वारा जारी नवीनतम रेटिंग सूची में की गई है।

सीएचएसएल (टियर–2) परीक्षा 10 अप्रैल को

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) द्वारा संयुक्त उच्च माध्यमिक स्तर परीक्षा (सीएचसीएल) (टियर–2) का आयोजन 10 अप्रैल को सुबह 8.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक दो पालियों में किया जाएगा।

परीक्षा में सम्मिलित होने वाले अभ्यर्थियों के ई–प्रवेश पत्र निर्धारित परीक्षा तिथि से 3–4 दिन पूर्व आयोग की आधिकारिक वेबसाइट (http://ssc.gov.in/ 1https://sscer.org/) पर उपलब्ध करा दिए जाएंगे।

सुदूरवर्ती हंसपुरी गांव में लगा पशु चिकित्सा शिविर

मायाबंदर, 4 अप्रैल

पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग द्वारा हाल ही में उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िले के सुदूरवर्ती गांव हंसपुरी में व्यापक पशु चिकित्सा आउटरीच शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान पशु चिकित्सा टीम ने पशुओं के रक्त के नमूने सीरो–मॉनिटरिंग के लिए एकत्र किए, पशुपालकों को आवश्यक दवाइयां वितरित कीं और इच्छुक किसानों को चारे के बीज भी उपलब्ध कराए। किसानों को विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं और लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन के अंतर्गत कुल 32 पशुओं, मुख्यतः भैंसों, को ईयर–टैग किया गया। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार कठिन परिस्थितियों में भी टीम ने पूरी निष्ठा से कार्य किया। कई पशुपालकों को अपने पशुओं को संभालने में कठिनाई हुई, फिर भी पशु चिकित्सा कर्मियों ने सभी निर्धारित कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किए।

माइलतिलक और वंडूर गांवों में कृषि शिविर आयोजित

श्री विजय पुरम, 4 अप्रैल

सामुदायिक विकास खंड, फरारगंज, दक्षिण अण्डमान के अंतर्गत हाल ही में माइलतिलक और वंडूर गांवों में कृषि शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य स्थानीय किसानों को सहयोग प्रदान करना और उन्हें सशक्त बनाना था।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार शिविर के दौरान किसानों को आधुनिक एवं वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों, टिकाऊ खेती के तरीकों तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक किया गया, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ाने और किसानों के कल्याण को सुनिश्चित किया जा सके। किसानों से बातचीत करते हुए खंड विकास अधिकारी श्रीमती ललिता टिग्गा ने उन्हें उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाने तथा सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जा रही योजनाओं और सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। दोनों गांवों के किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अधिकारियों के साथ सार्थक चर्चा की। उन्होंने खेती की तकनीकों, कीट प्रबंधन तथा सरकारी सहायता प्राप्त करने से संबंधित कई प्रश्न भी पूछे। प्रतिभागियों को जानकारी बढ़ाने और बेहतर पद्धतियों को अपनाने के लिए सूचना सामग्री भी वितरित की गई।

अवैध गांजा खेती का भंडाफोड़, एक गिरफ्तार

मायाबंदर, 4 अप्रैल

गत 2 अप्रैल, 2026 को उत्तर अण्डमान के तालबागान क्षेत्र में अवैध रूप से गांजा की खेती किए जाने की विश्वसनीय सूचना पर कार्रवाई करते हुए थाना कालीघाट की पुलिस टीम ने श्री ऑगस्टीन बल्लवा (52 वर्ष) के निवास के पास छापेमारी की। यह कार्रवाई श्री अंकित यादव (दानिप्स), एसडीपीओ, डिगलीपुर के पर्यवेक्षण तथा श्री विकास स्वामी (आईपीएस), पुलिस अधीक्षक, उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िला के समग्र निर्देशन में की गई।

अभियान के दौरान पुलिस टीम ने विधिसम्मत तरीके से परिसर की तलाशी ली, जिसके परिणामस्वरूप अवैध गांजा बरामद किया गया। इसमें जीवित एवं उखाड़े गए गांजा के पौधे तथा गांजा के फूल (टॉप्स) से भरा एक पैकेट शामिल है। सभी बरामद सामग्री को विधि अनुसार ज़ब्त कर लिया गया। इस संबंध में एनडीपीएस अधिनियम, 1985 की संबंधित धाराओं के अंतर्गत मामला दर्ज़ कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। आगे की जांच जारी है।

उत्तर व मध्य अण्डमान के पुलिस अधीक्षक से प्राप्त विज्ञप्ति में आम जनता से अनुरोध किया गया है कि वे किसी भी अपराध या अवैध गतिविधि के संबंध में विश्वसनीय जानकारी निकटतम पुलिस थाना या हेल्पलाइन नंबर 100, 112 अथवा 03192–273344 पर साझा करें। सूचनादाताओं की पहचान पूर्णतः गोपनीय रखी जाएगी तथा उपयुक्त पुरस्कार भी प्रदान किया जाएगा।

लिटिल अण्डमान प्रो से भारत के

पृष्ठ 1 का शेष

प्रकार के आयोजन राष्ट्रीय प्रतिभा को मजबूत करने और खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों के लिए तैयार करने में अहम भूमिका निभाते हैं। प्रतियोगिता के अलावा, इस चैंपियनशिप का उद्देश्य अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह को भारत में सर्फिंग और समुद्री खेलों के भविष्य के केंद्र के रूप में स्थापित करना भी है। स्वच्छ जल, प्रवाल भित्तियां और स्थिर लहरों के कारण लिटिल अण्डमान सर्फरों और साहसिक पर्यटन से जुड़े हितधारकों का ध्यान तेजी से आकर्षित कर रहा है। यह पहल स्थानीय युवाओं को प्रेरित करने और खेल के माध्यम से सतत विकास को बढ़ावा देने में सहायक होगी।

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय सर्फरों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति को मजबूत किया है। राष्ट्रीय टीम ने एशियाई सर्फिंग चैंपियनशिप में पहली बार टीम रजत पदक जीता, साथ ही कई बार सेमीफाइनल और क्वार्टर फाइनल तक पहुंचकर अपनी बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का प्रदर्शन किया।

सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया ने वर्ष 2026 के लिए विस्तारित वार्षिक प्रतियोगिता कैलेंडर भी जारी किया है, जिसमें सर्फिंग और स्टैंड–अप पैडल (एसयूपी) के पहले से अधिक आयोजन शामिल हैं। राष्ट्रीय सर्किट पूरे वर्ष में विभिन्न चरणों में आयोजित होगा, जिसकी शुरुआत जनवरी में मुंबई एसयूपी चैंपियनशिप से होगी। इसके बाद अप्रैल से लिटिल अण्डमान, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे पारंपरिक सर्फिंग केंद्रों सहित विभिन्न स्थानों पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी, जिससे खिलाड़ियों को निरंतर प्रतिस्पर्धात्मक अवसर मिलेंगे।

इसके अतिरिक्त, वर्ष 2026 में पहली बार लॉन्गबोर्डिंग श्रेणी को राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल किया जाएगा, जिससे पारंपरिक सर्फिंग शैली में विशेषज्ञ खिलाड़ियों के लिए नए अवसर सृजित होंगे। लिटिल अण्डमान प्रो 2026 का उद्देश्य सर्फिंग की भावना का उत्सव मनाने के साथ–साथ ज़िम्मेदार पर्यटन और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देना है, जो इस क्षेत्र की मजबूत संरक्षण नीति के अनुरूप है। (स्रोत: https://www.tribuneindia.com/)

दक्षिण अण्डमान में छात्रों के लिए जीवन

पृष्ठ 1 का शेष

महत्व पर भी जागरूकता दी गई तथा स्वास्थ्य संकेतकों की निगरानी के तहत रक्तचाप मापने का व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा रक्त शर्करा की निगरानी के बारे में बुनियादी जानकारी, साथ ही प्रारंभिक चेतावनी संकेतों की पहचान और उचित प्रतिक्रिया उपायों की जानकारी दी गई। इस प्रकार की पहल से छात्रों की चिकित्सा आपात स्थितियों में तैयारी और प्रतिक्रिया क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है। जागरूकता और ज़िम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देते हुए यह कार्यक्रम विद्यालयों और समुदाय में स्वास्थ्य के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण विकसित करेगा। साथ ही, छात्रों को सामुदायिक स्वास्थ्य दूत और सहपाठी शिक्षकों के रूप में विकसित करने पर भी ज़ोर दिया गया। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार शिक्षा विभाग के कार्यालय प्रमुख ने ज़िला प्रशासन की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम जागरूक, कुशल और स्वास्थ्य–सचेत युवाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने ज़िले के सभी विद्यालयों में इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इंडिया स्किल्स राष्ट्रीय प्रतियोगिता

पृष्ठ 1 का शेष

- इंटेलिजेंट सिक्योरिटी टेक्नोलॉजी–कुमार चयान मृधाः कांस्य पदक
- कारपेंट्री–कुमार शुभम परमान्यः उत्कृष्टता पदक मेडेलियन फॉर एक्सीलेंस
- इंटेलिजेंट सिक्योरिटी टेक्नोलॉजी–कुमार मोहम्मद जाहिदः उत्कृष्टता पदक

रजत और कांस्य पदक विजेताओं को अब राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) द्वारा, भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के अधीन, उनके संबंधित कौशलों में उन्नत प्रशिक्षण, विकास और मूल्यांकन प्रदान किया जाएगा। उनके प्रदर्शन के आधार पर सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी का चयन सितंबर, 2026 में शंघाई (चीन) में आयोजित होने वाली वर्ल्ड स्किल्स प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जाएगा।

पूरे आयोजन और अण्डमान तथा निकोबार टीम की भागीदारी का समन्वय आईटीआई, डॉलीगंज द्वारा किया गया। टीम का नेतृत्व श्री वेंकटेश सीएच (प्रधानाचार्य/उप प्रशिक्षु सलाहकार) ने किया, जबकि आईटीआई, डॉलीगंज के श्री के. नरेश (प्रशिक्षक) एवं सुश्री

के.एस. शिवानी (प्रशिक्षक) ने टीम का मार्गदर्शन किया। आईटीआई के व्यावसायिक प्रशिक्षकों एवं अनुदेशकों का योगदान, जिनके मार्गदर्शन और मेंटरशिप के साथ–साथ प्रशिक्षुओं की मेहनत और समर्पण ने इस सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार यह उल्लेखनीय उपलब्धि इस बात की पुष्टि करती है कि अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के युवा राष्ट्रीय और वैश्विक मंचों पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए पूरी तरह सक्षम हैं और एक कुशल एवं सशक्त भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

एनटीपीसी विद्युत व्यापार निगम लिमिटेड
(एनटीपीसी लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी)

Expression of Interest

होप टाउन, श्री विजयपुरम,अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह में कार्यालय स्थान की आवश्यकता

दिनांक : 03.04.2026

एनटीपीसी विद्युत व्यापार निगम लिमिटेड (NVVN) होप टाउन, श्री विजयपुरम में कार्यालय उपयोग हेतु उपयुक्त परिसर लीज़ पर लेने का प्रस्ताव करता है। आवश्यकताओं का विवरण, पात्रता एवं शर्तें
ईओआई दस्तावेज़ में उपलब्ध हैं।
ईओआई दस्तावेज़ निम्न वेबसाइटों से डाउनलोड किया जा सकता है:
https://eprocurentpc.nic.in/ or https://www.nvvn.co.in/tenders-eoi/
इच्छुक पक्ष निर्देशानुसार विधिवत भरा हुआ सूचना-प्रविष्टि पत्र (EOI) प्रस्तुत कर सकते हैं।

किसी भी प्रश्न के लिए कृपया संपर्क करें: nvvncontracts@ntpc.co.in

वरिष्ठ प्रबंधक (अनुबंध एवं सामग्री)
एनटीपीसी विद्युत व्यापार निगम लिमिटेड
एनटीपीसी इंजीनियरिंग कार्यालय परिसर, पांचवां मंजिल, प्लॉट संख्या-ए-8ए,
सेक्टर-24, नोएडा, उत्तर प्रदेश-201301

Leading the Power Sector

फा.सं. 20–32(1)/2017/वक्फ
अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन
सचिवालय
श्री विजय पुरम, दिनांक 31 मार्च, 2026

प्रेस नोट

अभी हाल में वक्फ संशोधन अधिनियम, 2025, जो दिनांक 05.04.2025 को भारत के राजपत्र, नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ था, जिसके तहत वक्फ अधिनियम, 1995 की धारा 83 (4) में संशोधन किया गया था, जो इस प्रकार से है :

(ग) एक व्यक्ति जो मुस्लिम कानून और न्यायशास्त्र का ज्ञाता हो – सदस्य

इसके अलावा, उप–धारा (4A) के परंतुक खंड में किए गए संशोधन के अनुसार, सदस्य का कार्यकाल उनकी नियुक्ति की तिथि से पाँच वर्ष तक या उनकी आयु पैंसठ वर्ष होने तक, जो भी पहले हो, का होगा ।

अतः अधिनियम की उक्त धारा के तहत गठित की जाने वाली वक्फ ट्रिब्यूनल के तीसरे सदस्य के रूप में नामित किए जाने के लिए इच्छुक/सहमत मुस्लिम व्यक्तियों से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।

उपर्युक्त योग्यता रखने वाले इच्छुक/सहमत मुस्लिम व्यक्तियों के आवेदन (जीवनवृत्त सहित) इस प्रेस नोट के प्रकाशित होने की तिथि से 30 दिनों के भीतर सहायक सचिव (राजस्व), अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन, सचिवालय, श्री विजय पुरम के कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।

सहायक सचिव (राजस्व)

शपथ पत्र

मैं, ई अविनाश, सुपुत्र ई भास्कर राव निवासी शोर प्वाइंट ग्राम, फरारगंज तहसील के अंतर्गत दक्षिण अण्डमान जिला, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमह एतद्द्वारा सत्यनिष्ठा से पुष्टि और घोषणा करता हूँ कि :

1. कि मैं इस द्वीप का निवासी हूँ और उपरोक्त पते पर रहता हूँ।
2. कि मेरे पिताजी का नाम मेरे आधार कार्ड में ई भास्कर राव और पैन कार्ड में इल्लीमल्ली भास्कर राव प्रविष्टि किया गया है।
3. कि 'ई' का विस्तारित रूप इल्लीमल्ली है।
4. कि मेरे पिताजी का नाम मेरे जन्म प्रमाणपत्र में ई भस्कर राव और मेरे सीबीएसई के दसवीं पास प्रमाणपत्र और सभी शैक्षिक दस्तावेजों में भस्कर राव प्रविष्टि किया गया है।
5. कि उपरोक्त भिन्न नाम ई भस्कर राव, भस्कर राव, ई भास्कर राव और इल्लीमल्ली भास्कर राव एक ही समान व्यक्ति है जो मेरे पिता से संबधित है।
6. कि मैं यह शपथ पत्र नए पासपोर्ट प्राप्त करने के लिए उपरोक्त उल्लिखित भिन्न नाम जो एक ही समान व्यक्ति से संबंधित है को घोषित करने के उद्देश्य से कर रहा हूँ जो अब से सभी सरकारी और गैर सरकारी उद्देश्यों के लिए मेरा नाम ई अविनाश सुपुत्र इल्लीमल्ली भास्कर राव के रूप में जाना जाएगा।

कि मेरे द्वारा दिए गए उपरोक्त उल्लिखित कथन मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य और सही है।

स्थान : श्री विजय पुरम
दिनांक : 31.03.2026

शपथकर्त्ता

नौसेना में शामिल हुआ युद्धपोत तारागिरी, दुश्मन पर हमला और दोस्तों की करेगा मदद

नई दिल्ली, 04 अप्रैल। भारतीय नौसेना में शुक्रवार को एक नवीनतम स्टील्थ युद्धपोत, 'तारागिरी' शामिल किया गया है। इस युद्धपोत को विशाखापत्तनम में 3 अप्रैल की दोपहर नौसेना में कमीशन किया गया। इस मौके पर रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह मौजूद रहे। 'तारागिरी' नामक यह युद्धपोत सुपरसोनिक मिसाइलों से लैस है।

ये मिसाइल सतह से सतह पर मार कर सकती हैं। इसमें मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें और एक विशेष पनडुब्बी रोधी युद्ध प्रणाली भी है। अत्याधुनिक युद्ध प्रबंधन प्रणाली व घातक हथियारों से लैस यह युद्धपोत दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। यहां रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 'तारागिरी' को एक स्टेट ऑफ द आर्ट वॉरशिप करार दिया। उन्होंने कहा कि तारागिरी की कमीशनिंग, भारत की बढ़ती हुई सामुद्रिक शक्ति का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि हमारी नौसेना भारत के मूल्यों और प्रतिबद्धता का प्रतीक है। आईएनएस तारागिरी की कमीशनिंग , भारतीय नौसेना की ताकत में, मूल्यों में, तथा प्रतिबद्धता में और वृद्धि करेगी। गौरतलब है कि मानवीय मूल्यों के प्रति सजग भारतीय नौसेना आपदा के दौरान देश ही नहीं विदेशों में भी आपदा राहत के कार्य में शामिल होती है। नौसेना का यह नया युद्धपोत तारागिरी भी मानवीय संकट व आपदा के दौरान राहत पहुँचाने में बड़ी मदद कर सकता है। इसकी अनुकूल मिशन प्रोफाइल इसे उच्च–तीव्रता वाले युद्ध के साथ साथ मानवीय सहायता और आपदा राहत के लिए एक आदर्श समुद्री जहाज बनाती है। राजनाथ सिंह ने कहा कि 'तारागिरी' हमारे राष्ट्रीय गौरव और सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। जब यह जहाज समुद्र की लहरों को चीरते हुए आगे बढ़ेगा, तो यह पूरी दुनिया को यह संदेश देगा कि भारत की ताकत भारत के लोगों में है, उनकी मेहनत में है, उनकी क्षमता में है और उनके अटूट संकल्प में है।

इस युद्धपोत का निर्माण मुंबई स्थित मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) द्वारा किया गया है। यह युद्धपोत अपने पूर्ववर्ती युद्धपोतों के डिजाइनों की तुलना में एक पीढ़ीगत विकास का प्रतिनिधित्व करता है। इसके निर्माण में 75 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग किया गया है। इस अवसर पर रक्षामंत्री ने मझगांव डॉक शिपयार्ड लिमिटेड और भारतीय नौसेना समेत सभी देशवासियों को बधाई दी।

कच्चे तेल का इतिहासः 175 साल पहले जमीन के नीचे मिला क्रूड ऑयल, चिड़िया और व्हेल ने कैसे मिटाया दुनिया का अंधेरा?

नई दिल्ली, 04 अप्रैल। अमेरिका–इजरायल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध की वजह से वैश्विक ऊर्जा संकट खड़ा हो गया है। ईरान के स्ट्रेट ऑफ होर्मुज पर प्रतिबंध लगाने की वजह से दुनियाभर में लोग पेट्रोल–डीजल की भारी कीमतों का सामना कर रहे हैं। आज के समय में पेट्रोल–डीजल से लेकर सभी जीवाश्म ईंधनों पर लोगों की निर्भरता काफी ज्यादा है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि जब दुनिया में इस कच्चे तेल का इजात ही नहीं हुआ था, तब लोग कैसे जीते थे।

कच्चे तेल के बिना कैसी थी लोगों की जिंदगी?

आज से करीब 175 साल पहले तक लोगों को पेट्रोल–डीजल तो क्या केरोसिन ऑयल के बारे में भी कुछ नहीं पता था। लोग अंधेरे में अपना जीवन बिता रहे थे। रात होते ही लोगों का घरों से बाहर निकलना मुश्किल था। अंधेरा होते ही लोग घरों में कैद हो जाते थे। आज के समय में ऐसे हालात के बारे में सोचना काफी खौफनाक लग सकता है, लेकिन पहले के समय में ये बात बहुत आम थी।

चिड़िया जलाकर रोशनी करते थे लोग

1700 से पहले के समय में लोग रात में यात्रा करने से कतराते थे। लेकिन जब कभी उन्हें जरूरत पड़ती थी, तब उन्होंने इसके लिए भी विकल्प तलाश रखे थे। क्रूड ऑयल की खोज से पहले लोग एक विशेष तरह की पेट्रेल नाम की चिड़िया का शिकार करते थे और उसे कई दिन तक घर में सुखाते थे। लोगों को रात में रोशनी करने की जब कभी जरूरत पड़ती थी, तब उस चिड़िया को एक लोहे के स्टैंड पर रखकर जलाते थे। सेल्मन फिश का भी लोग इसी तरह इस्तेमाल करते थे। सेल्मन फिश या पेट्रेल चिड़िया को जलाने से घंटों तक सड़कों पर रोशनी रहती थी।

लोगों ने निकाला व्हेल का तेल

1700 से 1850 के समय में लोगों ने रोशनी करने के लिए नई तकनीकों का इजात कर लिया। लोगों ने बड़ी संख्या में व्हेल मछली का शिकार करना शुरू कर दिया और इसके तेल से लैंप जलाना शुरू किया। अमेरिका ने व्हेल मछली का तेल निकालकर दुनिया को बेचा और इस कारोबार में महारथ हासिल कर ली। लेकिन व्हेल मछली का शिकार करना कई लोगों को पसंद नहीं था, इसके लिए लोगों ने नए विकल्पों की तलाश शुरू की।

केरोसीन ऑयल की खोज ने मिटाया अंधेरा

साल 1846 में वो समय आया, जब दुनिया को केरोसीन तेल मिला। कनाडा के आविष्कारक अब्राहम पाइनियो गेस्नर ने दुनिया से अंधेरा मिटा दिया। अब्राहम पाइनियो गेस्नर ने कोयला, कोलतार और ऑयल शेल को रिफाइन करके केरोसिन ऑयल यानी मिट्टी का तेल बनाया। केरोसिन ऑयल काफी ज्यादा सस्ता था। व्हेल से बनने वाले तेल की तुलना में केरोसीन ऑयल की कीमत आधी थी। इस तेल को गरीब से लेकर अमीर तक हर कोई खरीद सकता था।

कच्चे तेल की खोज ने बदली दुनिया

केरोसिन ऑयल की खोज के बाद भी बेहतर यूल की तलाश जारी रही। साल 1858 में अमेरिका के डार्टमाउथ कॉलेज के एक प्रोफेसर जॉर्ज बिसेल यूनाइटेड स्टेट्स के ही पेंसिल्वेनिया राज्य के कुछ ग्रामीण इलाकों में पहुंचे। यहां उन्हें चिकना–सा पदार्थ मिला, जिसका सैंपल वो अपने कॉलेज लेकर चले गए। प्रोफेसर जॉर्ज बिसेल ने इस पदार्थ को रिफाइन कर लिया और पता लगाया कि इस पदार्थ का इस्तेमाल लैम्प जलाने में किया जा सकता है। बिसेल को ये अंदाजा हो गया कि पेंसिल्वेनिया के इलाकों में जमीन के नीचे ऐसा तरल पदार्थ भारी मात्रा में मौजूद हो सकता है।

बिसेल ने एडविन ड्रेक की मदद से विलियम स्मिथ नाम के शख्स को हायर किया और इन सभी ने मिलकर जमीन के नीचे सालों से छिपे तेल की खोज शुरू की। विलियम स्मिथ को अंकल बिली के नाम से भी जाना जाता था। ये घरों में पानी के नल लगाने का काम करते थे। बिसेल, एडविन ड्रेक और विलियम स्मिथ जब जमीन में तेल खोज रहे थे, तब लोग उनका मजाक उड़ाते थे। उस दौरान लोगों का बस यही मानना था कि जमीन के नीचे केवल पानी मिल सकता है, तेल नहीं।

जमीन से 69 फीट नीचे मिला तेल

टाइटसविले इलाके में बड़ी मशक्कत के बाद 60 फीट तक ड्रिलिंग होने के बाद एडविन ड्रेक और अंकल बिली उम्मीद हार गए थे कि उन्हें तेल कभी मिल भी पाएगा। उन्होंने काम को रोकने के लिए बिसेल से बात करने के बारे में सोचा। 28 अगस्त 1859 का दिन जब एडविन ड्रेक बिसेल से काम रोकने के लिए बात करने गए थे, लेकिन अंकल बिली निराशा के बाद भी काम कर रहे थे। इस दोपहर जब करीब 69 फीट की ड्रिलिंग हो चुकी थी, तब अंकल बिली का बेटा ड्रिलिंग कर रहा था। अंकल बिली के बेटे ने खुदाई के दौरान जब जमीन से मिट्टी को निकाला, तब उस मिट्टी के साथ पाइप के निचले हिस्से में एक बदबूदार तरल पदार्थ भी बाहर आया। बिली का बेटा तुरंत उनके पास दौड़कर आया और बोला कि पापा तेल मिल गया।

अंकल बिली और उनके बेटे ने जमीन से 69 फीट नीचे तेल निकाल लिया था, लेकिन बिसेल और एडविन ड्रेक इस बात से पूरी तरह अंजान थे। अगले दिन जब एडविन ड्रेक, अंकल बिली से काम बंद करने के बारे में कहने पहुंचे, तब उन्होंने देखा कि ड्रिलिंग साइट पर भारी भीड़ इकट्ठा है। एडविन ड्रेक ने जब पास जाकर देखा तो बड़े–बड़े ड्रमों में और कंटेनर में कच्चा तेल भरा हुआ था। अंकल बिली ने ड्रेक को देखते ही गले लगा लिया।

20 डॉलर में बिका एक बैरल तेल

अमेरिकी जानकारों के मुताबिक, एडविन ड्रेक और अंकल बिली जिस इलाके में ड्रिलिंग कर रहे थे, वो जगह टाइटसविले से करीब 11 किमी दूर थी। एडविन ड्रेक और बिसेल ने जहां से तेल निकाला, वहां तेल के कुएं के चार–छह किलोमीटर के इलाकों को बाहर से आए लोगों ने खरीदना शुरू कर दिया और वहां मकान बनाने शुरू कर दिए। इसके साथ ही बड़े स्तर पर ड्रिलिंग का काम शुरू हो गया। यहां 20 डॉलर में एक बैरल तेल बिकना शुरू हो गया था। अमेरिका में यह शहर जल्द ही ऑयल सिटी के नाम से जाना जाने लगा।

एशियाई मुक्केबाजी चैंपियनशिप में निकहत ज़रीन, प्रिया और प्रीति पवार महिला सेमीफाइनल में पहुंचे

नई दिल्ली, 04 अप्रैल। एशियाई मुक्केबाजी चैंपियनशिप में निकहत जरीन, प्रिया और प्रीति पवार ने अपने–अपने मुकाबले जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है, जिससे भारत के लिए कम से कम तीन पदक पक्के हो गए हैं। मंगोलिया के उलानबातर में आयोजित एशियाई मुक्केबाजी चैंपियनशिप में निखत ज़रीन ने आज महिला 51 किलोग्राम वर्ग के क्वार्टरफाइनल में शानदार प्रदर्शन करते हुए फिलीपींस की शियान बागहिन को रोमांचक मुकाबले में मात दी। अब सेमीफाइनल में निखत का मुकाबला पेरिस 2024 ओलंपिक की स्वर्ण पदक विजेता चीन की वू यू से होगा। वहीं, महिला 60 किलोग्राम वर्ग में प्रिया ने चीन की चेंग्यू यांग को 4–1 से हराया और टूर्नामेंट में अपना प्रभावशाली प्रदर्शन जारी रखा। फाइनल में जगह बनाने के लिए उनका अगला मुकाबला मंगोलिया की नामुन मोनखोर से होगा। जबकि महिला 54 किलोग्राम वर्ग में, विश्व मुक्केबाजी कप फाइनल की स्वर्ण पदक विजेता प्रीति पवार ने मंगोलियाई मुक्केबाज एनखजारगल मुंगुनत्सेत्सेंग को 5–0 से हराया। प्रीति सेमीफाइनल मुकाबले में दक्षिण कोरिया की इम ऐजी से भिड़ेंगी, जो पेरिस 2024 ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता हैं।

इतिहास के पन्नों में 05 अप्रैलः नारीवादी समाज सुधारक पंडिता रमाबाई का निधन

नई दिल्ली, 04 अप्रैल। प्रख्यात भारतीय विदुषी, नारीवादी और समाज सुधारक पंडिता रमाबाई का 5 अप्रैल 1922 को निधन हो गया। 23 अप्रैल 1858 को महाराष्ट्र में जन्मीं रमाबाई ने 19वीं सदी में महिला शिक्षा और विधवाओं के उत्थान के लिए क्रांतिकारी कार्य किया।

उन्होंने महिला शिक्षा और बाल विवाह के विरोध के लिए पुणे में आर्य महिला समाज (1882) की स्थापना की। विधवा, विशेषकर बाल विधवाओं के लिए शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु मुंबई (बाद में पुणे) आवासीय विद्यालय शारदा सदन (1889) की स्थापना की। केडगाँव में अनाथों, बेसहारा महिलाओं और विधवाओं के लिए बड़ा शरणस्थल मुक्ति मिशन (1898) की स्थापना की। उनका पूरा जीवन पारंपरिक रूढ़ियों को तोड़कर भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए समर्पित था।

1883 में चिकित्सा का अध्ययन करने इंग्लैंड गईं और 1886 में अमेरिका का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया। वे वेदों व शास्त्रों में निपुणता के कारण पंडिता व सरस्वती उपाधि पाने वाली पहली भारतीय महिला थीं। साल 1919 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कैसर–ए–हिंद पदक से सम्मानित किया।

अन्य अहम घटनाएं:

1975 – सऊदी अरब के राजा फ़ैजल की हत्या।
1999 – इराक में वियाग्रा पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा।
–मलेशिया में श्हेन्ड्राश नामक वायरस से बचाव के लिए 8 लाख 30 हजार सूअरों को सामूहिक रूप से मार डाला गया।
2001 – जासूसी विमान प्रकरण में संयुक्त राज्य अमेरिका ने घुटने टेके, चीन के समक्ष खेद प्रकट किया।
2002 – भारत, म्यांमार व थाइलैंड के बीच मोरे–कलावा–मांडले सड़क परियोजना पूरी करने के लिए सहमति।
2003 – अमेरिकी संसद में पाकिस्तान की आर्थिक मदद में कटौती का प्रस्ताव पेश।
2006 – सिंगापुर में 45 भारतीयों को आव्रजन अपराधों में गिरफ़्तार किया गया।
2007 – ईरान ने 15 ब्रिटिश नौसैनिकों को रिहा किया।
2008 –पार्वती ओमनाकुट्टन फेमिना मिस इंडिया वर्ल्ड बनी।
–इराक में हुए आत्मघाती हमले में 9 लोग मारे गए।
–अफ़ग़ानिस्तान में भारतीय सीरियलों के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा।
2010 –नक्सलियों द्वारा किए गए अब तक के सबसे भीषण हमले में दंतेबाड़ा में सीआरपीएफ के 73 जवानों की मौत।

विदेशी नहीं, भारत की देन है पोलो! जानिए मणिपुर से कैसे दुनियाभर में छाया यह शाही खेल

नई दिल्ली, 04 अप्रैल। गूंजती टापें, सवारों के हाथों में घूमते सोटे, और दर्शकों की ऊंची आवाजों से गूंजता मैदान– पोलो का खेल पूरे जोश में है! यह कोई विदेशी भूमि नहीं, बल्कि मणिपुर के राजघराने का दृश्य है। क्या आपको पता है कि आधुनिक पोलो का उद्गम भारत के मणिपुर से हुआ है? पोलो का इतिहास बहुत पुराना है। दक्षिण एशिया में, प्राचीन मैतेयी ग्रंथ 'कंगजीरओई' के अनुसार, इस खेल की शुरुआत लगभग 1400 ईसा पूर्व में हुई, जब मणिपुर के वर्तमान क्षेत्र में स्थित प्राचीन राज्य 'कंगलईपाक' में राजा निंगथौ कंगबा का शासन था।

प्राचीन ईरान में भी आज के पोलो जैसा घुड़सवारी पर आधारित एक खेल 600 ईसा पूर्व के आस–पास खेला जाता था। चीन में यह खेल सातवीं शताब्दी में तांग वंश के शासनकाल में प्रचलित था। परंपरागत रूप से पोलो में दो टीमों में सोलह–सोलह खिलाड़ी घोड़े पर सवार होकर खेलते थे। खिलाड़ियों के हाथों में अर्द्धचंद्राकार सिरे वाली छड़ियां होती थीं, जिनसे वे गेंद को प्रतिद्वंद्वी टीम के गोल में मारते थे। तब से पोलो के विभिन्न रूप दुनिया के कई हिस्सों में खेले जाते रहे हैं– चीन, तिब्बत, म्यांमार और हाल के समय में दक्षिणी अफ्रीका और अमेरिका में भी। भारतीय उपमहाद्वीप में यह खेल गिलगित–बाल्टिस्तान, लद्दाख और मणिपुर में खेला जाता था। इसके अलावा तुर्क–अफगान और मुगल शासन वाले उत्तरी भारत, राजपूत–शासित पश्चिमी भारत और दक्कन क्षेत्र में भी पोलो का प्रचलन था।

मणिपुर की शाही विरासत

आज के दौर में पोलो को भले ही विशुद्ध ब्रिटिश खेल के रूप में देखा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें भारत के उत्तर–पूर्वी राज्य मणिपुर में मिलती हैं। आरंभिक आधुनिक मणिपुर में 'सगोल कंगजई' यानी घोड़े पर खेला जाने वाला हाकी जैसा खेल, मणिपुर और बर्मा के राजघरानों के बीच लोकप्रिय शाही शौक था। 19वीं शताब्दी के बर्मा के चित्रित हस्तलेख, जिन्हें पराबैक कहा जाता है, इस खेल को शाही उत्सवों और समारोहों का हिस्सा बनाकर प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों में घोड़े पर सवार पुरुषों को हाथों में सोटे लिए खेलते हुए दिखाया गया है, जबकि शाही परिवार के सदस्य खेल को देख रहे होते हैं। जब 19वीं शताब्दी में बर्मा ने मणिपुर पर आक्रमण किया, तो दरबारी और स्थानीय लोग पड़ोसी क्षेत्रों– जो आज असम का हिस्सा हैं– की ओर पलायन कर गए और वहीं इस खेल को खेलते रहे।

फुलु से पोलो का सफर

इन्हीं क्षेत्रों में, 19वीं शताब्दी के मध्य के आस–पास, ब्रिटिश चाय बागान मालिकों और सेना अधिकारियों ने इस खेल को देखा और इसकी ओर आकर्षित हुए। इस खेल को 'पोलो' नाम दिया गया, जिसके बारे में माना जाता है कि यह तिब्बती शब्द 'फुलु' से आया है, जिसका अर्थ होता है 'गेंद'। कुछ दशकों में ब्रिटिश अधिकारियों ने असम, बंगाल और अन्य स्थानों पर कई पोलो क्लब स्थापित किए– पहला क्लब वास्तव में 1861–62 के बीच कलकत्ता में दो ब्रिटिश सेना अधिकारियों, जोसेफ शेरर और राबर्ट स्टीवर्ड द्वारा स्थापित किया गया था।

शुरुआती दौर में ब्रिटिश लोग इस खेल को छोटे कद के घोड़ों पर, धीमी गति से और आठ–आठ खिलाड़ियों की टीमों के साथ खेलते थे। जैसे–जैसे प्रतियोगिताएं बढ़ने लगीं, खेल में बदलाव आया और यह बड़े घोड़ों पर खेला जाने लगा। पोलो 1868 में माल्टा और 1869 में इंग्लैंड पहुंचा, जहां इसे ढालकर चार खिलाड़ियों के उस संस्करण में बदला गया, जिसे हम आज जानते हैं। भारत में 1892 में इंडियन पोलो एसोसिएशन की स्थापना हुई और पहले विश्व युद्ध के बाद इस खेल के लिए अंतरराष्ट्रीय नियमों और विनियमों को औपचारिक रूप से तय किया गया।

आधुनिकीकरण और वैश्विक विस्तार

19वीं शताब्दी में ब्रिटिश अधिकारियों के बीच अश्वक्रीड़ा (घुड़सवारी से जुड़ा खेल) ही शिष्टाचार और कुलीनता का एक अहम हिस्सा माना जाता था। यही कारण है कि तेज रतार, जोखिम भरा और महंगा खेल पोलो भारत में उनका एक प्रिय शौक बन गया। यह खेल शारीरिक फिटनेस बनाए रखने में मदद करता था और नए रंगरूटों को अनुभवी सीनियर अधिकारियों के साथ मेलजोल बढ़ाने का अवसर भी देता था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद पोलो ब्रिटिश कुलीनता और शौर्य के नए आदर्शों का प्रतीक बन गया। आज यह खेल दुनिया के 70 से अधिक देशों में खेला जाता है।

कक्षा तीसरी से आठवीं के लिए कंप्यूटेशनल थिंकिंग और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस करिकुलम लॉन्च

नई दिल्ली, 04 अप्रैल।

सीबीएसई बोर्ड के मान्यता प्राप्त स्कूलों से लेकर 22 राज्यों के सरकारी स्कूलों के कक्षा तीसरी से आठवीं कक्षा के छात्र अब आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) और कंप्यूटेशनल थिंकिंग (सीटी) के नए पाठ्यक्रम से पढ़ाई करेंगे। केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने 1 अप्रैल, 2026 को दिल्ली में कक्षा तीसरी से आठवीं कक्षा तक के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और कंप्यूटेशनल थिंकिंग का नया पाठ्यक्रम जारी किया। यह व्यवस्था इसी सत्र से लागू होगी।

शिक्षा मंत्री प्रधान ने कहा कि तीसरी से कम्प्यूटेशनल थिंकिंग (सीटी) और एआई पाठ्यक्रम सभी को पढ़ाया जाएगा। नए पाठ्यक्रम में संरचित मॉड्यूल, व्यापक शिक्षक पुस्तिकाएं और सशक्त छात्र मूल्यांकन ढांचा भी है। हमारा मकसद, आज के समय में बच्चों को डिजिटल दुनिया के लिए तैयार करना है। कंप्यूटेशनल थिंकिंग एआई की नींव है। शिक्षा के लिए एआई, शिक्षा में एआई की परिकल्पना के अनुरूप, यह पहल युवा दिमागों में आलोचनात्मक सोच, डिजाइन अभिविन्यास और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देकर संवर्धित शिक्षा की दिशा में एक निर्णायक बदलाव देगी।

एनसीईआरटी के विशेषज्ञों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे के तहत इसे भविष्य की जरूरतों के आधार पर तैयार किया है। इसमें स्कूली शिक्षा की शुरुआत से छात्र सीटी कौशल और एआई से हर दिन की समस्याओं की पहचान कर उसका हल निकालना सीखेंगे। इसका मकसद, छात्रों को शुरुआती स्तर पर टेक्नोलॉजी के लिए तैयार करना है, ताकि भारत एआई में सुपर हब बनाना है।

पाठ्यक्रम को रोचक और आसान बनाया गया है। इसमें गेम, पजल और एक्टिविटी से सीखाया जाएगा। बड़े सवालों को छोटे हिस्सों में हल करना, ग्रुप डिस्कशन और टीमवर्क पर फोकस है। जबकि परीक्षा में भी बदलाव होगा, जिसमें अब सिर्फ रटने पर नहीं, बल्कि समझ और कौशल पर ध्यान दिया जाएगा। सीटी आधारित सवाल और प्रैक्टिकल गतिविधियां होगी, जिसे शिक्षकों द्वारा लगातार मूल्यांकन होगा। बच्चों की रचनात्मक सोच और समझ को प्राथमिकता रहेगी।

प्रौद्योगिकी आधारित कंप्यूटिंग में भारत के नेतृत्व को वैश्विक मान्यता मिलने के साथ, यह पाठ्यक्रम छात्रों को डिजिटल भविष्य से सार्थक रूप से जुड़ने और उसे आकार देने में सक्षम बनाएगा। सीटी कौशल के माध्यम से विकसित एआई तत्परता से छात्रों में तार्किक सोच, समस्या समाधान, पैटर्न पहचान आदि जैसी गणनात्मक सोच क्षमताओं का विकास करेगा।

इससे वे प्रतिदिन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका और उपयोग को समझ सकेंगे। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नवाचार, आलोचनात्मक सोच और नैतिक निर्णय लेने की क्षमताओं को बढ़ावा देने के साथ– साथ गणनात्मक सोच, डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी के जिम्मेदार उपयोग में मजबूत आधार तैयार करना है।

जन विश्वास विधेयक 2026 का उद्देश्य विश्वास आधारित शासन को बढ़ावा देना है–केन्द्रीय मंत्री

नई दिल्ली, 04 अप्रैल।

वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने कहा है कि जन विश्वास (प्रावधान संशोधन) विधेयक, 2026 में किए गए सुधार, कानूनों को सरल बनाने, व्यवसाय और व्यक्तियों पर कानूनी नियमों, सरकारी नीतियों और कर संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए समय, वित्त और प्रशासनिक दबाव को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

नई दिल्ली में पत्रकारों से बातचीत में श्री गोयल ने कहा कि इस विधेयक का उद्देश्य आम लोगों को नियंत्रित करना नहीं, बल्कि उन्हें लाभ पहुंचाना और जीवन और व्यापार में सुगमता के लिए विश्वास आधारित शासन को बढ़ावा देना है।

उन्होंने कहा कि जन विश्वास विधेयक के माध्यम से पहली बार 79 अधिनियमों के अंतर्गत एक हजार प्रावधानों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया गया है। श्री गोयल ने कहा कि यह विधेयक, विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के लिए महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि यह कानून, सरकार द्वारा आम आदमी, छोटे व्यवसायों, स्टार्टअप्स और उद्यमियों पर भरोसे को दर्शाता है। श्री गोयल ने कहा कि 12 राज्यों ने पहले ही जन विश्वास कानूनों के संस्करण लागू कर दिए हैं और अन्य राज्यों से भी छोटे अपराधों को अपराध की श्रेणी से

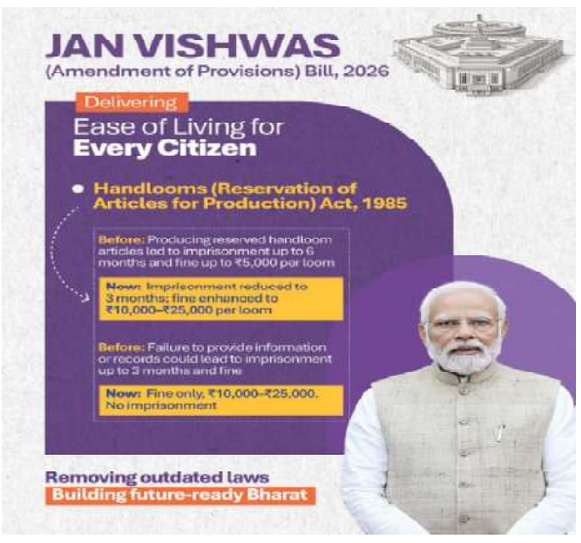

बाहर करने पर विचार करने का आग्रह किया गया है।

उन्होंने कहा कि यह कदम उस औपनिवेशिक मानसिकता को दूर करने के लिए उठाया गया है जिसमें, न्याय के बजाय दंड को प्राथमिकता दी जाती थी। श्री गोयल ने कहा कि वर्तमान में छोटे अपराधों से संबंधित पांच करोड़ मामले न्यायालयों में लंबित हैं। ऐसे में, इन सुधारों से न्यायिक प्रणाली में भी सुगमता होगी।

सरकार वृक्षारोपण के लिए उपग्रह आधारित आकलन और क्षेत्र सत्यापन के संयोजन का उपयोग करती है

नई दिल्ली, 04 अप्रैल।

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने कहा है कि वृक्षारोपण कार्यक्रमों के तहत लगाए गए पौधों की उत्तरजीविता दर वर्तमान में लगभग 60 से 70 प्रतिशत अनुमानित है। देश भर में वृक्षारोपण अभियानों की सफलता का आकलन करने के लिए उपग्रह इमेजिंग और जीआईएस तकनीकों के माध्यम से निगरानी की जा रही है।

राज्यसभा में एक पूरक प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री कीर्ति वर्धन ने कहा कि सरकार वृक्षारोपण के लिए उपग्रह आधारित आकलन और क्षेत्र सत्यापन के संयोजन का उपयोग करती है। उन्होंने कहा कि भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट आकलन तंत्र हर दो साल में प्रगति की समीक्षा करता है, जिससे सरकार को यह आकलन करने में मदद मिलती है कि वास्तव में कितने रोपित पौधे जीवित बचे हैं।

पर्यावरण के लिए वनों के महत्व पर एक सदस्य द्वारा उठाए गए सवालों का जवाब देते हुए श्री कीर्ति वर्धन ने कहा कि भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर) 2023 के अनुसार, देश का वन और वृक्ष आवरण 8 लाख 27 हजार 357 वर्ग किलोमीटर है, जो भारत के कुल

भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 25 प्रतिशत है।

उन्होंने कहा कि सरकार राष्ट्रीय मिशनों, राज्य स्तरीय कार्यक्रमों और अन्य वृक्षारोपण पहलों के समन्वय के माध्यम से वन क्षेत्र को और अधिक विस्तारित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। राजस्थान और अरावली भूभाग का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए उन्होंने ने कहा कि अरावली भूभाग बहाली और अरावली हरित दीवार पहल के तहत वृक्षारोपण और पर्यावरण बहाली गतिविधियां चलाई जा रही हैं।

नेशनल मेरीटाइम डे : 'एसएस लॉयल्टी' से शुरू हुआ सफर, आज समुद्री ताकत बन रहा भारत

नई दिल्ली, 04 अप्रैल।

क्या आप जानते हैं कि जिस समंदर पर आज भारत शान से तिरंगा फहरा रहा है, उस पर कभी किसी और का एकाधिकार था? बॉम्बे बंदरगाह में विश्व के समुद्री व्यापार पर ब्रिटिश जहाजों का दबदबा था। वे मनमाना किराया वसूलते और किसी भी भारतीय कंपनी को टिकने नहीं देते थे।

महान उद्योगपति जमशेदजी टाटा ने अपनी 'टाटा लाइन' शुरू कर यह चक्रव्यूह तोड़ने की कोशिश की थी, लेकिन ब्रिटिश कंपनियों ने 'किराया–युद्ध' छेड़कर उन्हें व्यापार से बाहर कर दिया। तभी एक गुजराती उद्योगपति वालचंद हीराचंद ने 1919 में अपने दोस्तों के साथ मिलकर 'सिंधिया स्टीम नेविगेशन कंपनी' बनाई। उन्होंने ग्वालियर के महाराजा से एक 'हॉस्पिटल शिप' खरीदा, उसे नया रूप दिया और 'एसएस लॉयल्टी' नाम रखा।

5 अप्रैल 1919 को बॉम्बे के तट से 'एसएस लॉयल्टी' ने जब लंदन के लिए अपनी पहली व्यावसायिक यात्रा भरी, तो यह सिर्फ एक जहाज का सफर नहीं था। यह ब्रिटिश एकाधिकार के सीने पर किया गया एक सीधा राष्ट्रवादी वार था। इसी अदम्य साहस को सलाम करने के लिए भारत हर साल 5 अप्रैल को 'नेशनल मेरीटाइम दिवस' मनाता है।

साल 1964 में 5 अप्रैल को ही बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय की शुरुआत हुई थी। एसएस लॉयल्टी जहाज मुंबई से लंदन के लिए रवाना हुआ था। एसएस लॉयल्टी की उस ऐतिहासिक यात्रा की याद में भारत सरकार ने 5 अप्रैल, 1964 को पहली बार 'नेशनल मेरीटाइम दिवस' मनाने की शुरुआत की थी।

आज, जब भारत अपना 63वां राष्ट्रीय समुद्री दिवस मना रहा है, तो परिस्थितियां बदल चुकी हैं। इस वर्ष की थीम 'मैरीटाइम इंडिया – एम्पावरिंग प्रोग्रेस' है।

'भारत कंटेनर शिपिंग लाइन' (बीसीएसएल) भारत सरकार की एक रणनीतिक पहल है, जिसका उद्देश्य विदेशी शिपिंग कंपनियों पर देश की निर्भरता को कम करना और वैश्विक समुद्री व्यापार में भारत की पकड़ को मजबूत करना है। फरवरी 2026 में, भारत ने अपनी पहली राष्ट्रीय कंटेनर शिपिंग लाइन स्थापित करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों के बीच एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

59,000 करोड़ रुपए के निवेश के साथ शुरू हुई यह योजना विदेशी जहाजों पर हमारी निर्भरता को खत्म कर देगी। भारत अब सिर्फ विदेशी जहाजों में अपना माल नहीं

भेजेगा, बल्कि स्वदेशी जहाज बनाएगा।

आज भारत के बंदरगाह किसी वर्ल्ड–क्लास एयरपोर्ट से कम नहीं हैं। 'सागरमाला कार्यक्रम' ने देश की तस्वीर बदल दी है। पहले जहां एक जहाज को बंदरगाह पर माल उतारने में औसतन 93 घंटे लगते थे, आज वह समय घटकर मात्र 48 घंटे रह गया है। सड़कों का बोझ कम करने के लिए नदियों और जलमार्गों (आईडब्ल्यूटी) से माल ढुलाई में 710 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

भारत 'हरित सागर' दिशा–निर्देशों के तहत ग्रीन हाइड्रोजन और सौर ऊर्जा से चलने वाले जीरो–एमिशन (शून्य–उत्सर्जन) बंदरगाह बना रहा है। दक्षिण कोरिया के साथ हुए हालिया समझौते के बाद, भारतीय युवाओं को दुनिया की सबसे बेहतरीन 'शिपबिल्डिंग' ट्रेनिंग मिलने जा रही है।

इन सब के बीच हमें उन चेहरों को कभी नहीं भूलना चाहिए जो समंदर के असली योद्धा हैं। हमारे नाविक महीनों तक परिवार से दूर, गहरे समंदर में तूफानों और चुनौतियों से लड़ते हुए भारत की अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा को चालू रखते हैं। इनकी बहादुरी और असाधारण काम को सम्मान देने के लिए ही सरकार 'सागर सम्मान पुरस्कार' देती है।

भारत का विजन 2047 बिल्कुल साफ है। 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना और 1 करोड़ (10 मिलियन) से ज्यादा नई नौकरियां पैदा करना। आज जो समुद्री क्षेत्र देश की जीडीपी में 4 प्रतिशत का योगदान देता है, 2047 तक इसे करीब 'दो अंकों' तक ले जाने का लक्ष्य है।

5 अप्रैल 1919 को 'एसएस लॉयल्टी' ने आजादी की जो चिंगारी समंदर की लहरों पर छोड़ी थी, आज वह 'अमृत काल' में एक मशाल बन चुकी है। यह दुनिया के लिए एक उद्घोषणा है कि समंदर के रास्तों पर अब भारत की नई वैश्विक महाशक्ति का उदय हो रहा है।

हॉर्मुज स्ट्रेट में भारत की कूटनीतिक सफलता, अभी तक कुल आठ जहाज सुरक्षित निकले

नई दिल्ली, 04 अप्रैल।

पश्चिम दिशा में जारी जंग के दौरान भारत के एलपीजी टैंकर ग्रीन सानवी ने सफलता पूर्वक हॉर्मुज स्ट्रेट पार कर आज एक बार फिर देश को काफी राहत वाली खबर दी है। अमेरिका और इजरायल तथा ईरान के बीच जारी जंग की वजह से हॉर्मुज स्ट्रेट के रास्ते गुजरने वाले माल वाहक जहाज और ऑयल या गैस टैंकर की आवाजाही लगभग ठप पड़ी हुई है। ईरान द्वारा हॉर्मुज स्ट्रेट की नाकाबंदी कर देने के कारण पूरी दुनिया में ऊर्जा संकट का खतरा मंडराने लगा है। ऐसी स्थिति में भारत के ऑयल और गैस टैंकर्स के इस रास्ते से सुरक्षित गुजरने से भारत की कूटनीतिक सफलता जग जाहिर हो गई है।

हॉर्मुज स्ट्रेट की नाकाबंदी के कारण वहां दुनिया भर के जहाज फंसे हुए हैं। वहीं भारत एक–एक कर अपने जहाजों को वहां से सुरक्षित निकल रहा है। ग्रीन सानवी समेत अभी तक कम से कम आठ भारतीय जहाज हॉर्मुज स्ट्रेट से सुरक्षित निकल चुके हैं। इनमें ग्रीन सानवी के अलावा शिवालिक, नंदा देवी, जग लाड़की, पाइन गैस, जग वसंत, बीडब्ल्यू टायर और बीडब्ल्यू एल्म के नाम शामिल हैं। इन आठ जहाजों के अलावा दो और जहाज ग्रीन आशा और जग विक्रम के भी आने वाले दिनों में हॉर्मुज स्ट्रेट पार कर भारत पहुंचने की उम्मीद है। इस तरह भारत का नाम उन देशों में शामिल हो गया है, जिनके सबसे ज़्यादा जहाज युद्ध प्रभावित हॉर्मुज स्ट्रेट से सुरक्षित गुजरे हैं। इससे भारत की ऊर्जा सप्लाई बनी हुई है और आम लोगों की ईंधन की जरूरत पूरी हो रही है।

जानकारों का कहना है कि इन जहाजों के सुरक्षित गुजरने से यह साफ है कि भारत ने मुश्किल हालात में भी अपनी ऊर्जा आपूर्ति को बनाए रखा है। भारत के आठ जहाजों के सुरक्षित निकल जाने के बावजूद इस समय 15 से ज्यादा भारतीय झंडे वाले जहाज हॉर्मुज स्ट्रेट के मुहाने पर मौजूद हैं, जिन पर करीब 485 भारतीय नाविक सवार हैं। उम्मीद की जा रही है कि भारत सरकार ईरान से बातचीत कर जल्दी ही इन जहाजों को भी हॉर्मुज के रास्ते सुरक्षित निकालने में सफल रहेगी।

आपको बता दें कि हॉर्मुज स्ट्रेट समुद्र का वह संकरा रास्ता है, जहां से दुनिया का लगभग 20 से 30 प्रतिशत कच्चा तेल गुजरता है।

बिना अंडों के क्यों अधूरा है ईस्टर संडे का जश्न... आखिर कैसे शुरू हुई इन्हें रंगने की रस्म

नई दिल्ली, 04 अप्रैल।

ईस्टर संडे का दिन ईसाई समुदाय के लिए महज एक तारीख नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रति अटूट भरोसे का प्रतीक है। बता दें, इस साल ईस्टर संडे 5 अप्रैल को पड़ रहा है। गुड फ्राइडे के ठीक दो दिन बाद आने वाला यह खास दिन मुख्य रूप से यीशु के मृत्यु के बाद फिर से जीवित हो उठने की याद में मनाया जाता है।

कई लोग ईस्टर को सिर्फ वसंत ऋतु के आगमन या रंग–बिरंगे अंडों तक सीमित मान लेते हैं, जबकि इसका असली अर्थ इससे कहीं ज्यादा गहरा है। यह बुराई पर अच्छाई और मृत्यु पर जीवन की परम विजय का उत्सव है। मान्यता के मुताबिक, जब यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाया गया और दफनाया गया, तो वे तीसरे दिन चमत्कारिक रूप से दोबारा जीवित हो गए।

यीशु ने सूली पर चढ़ने से पहले ही अपने वापस लौटने की भविष्यवाणी कर दी थी। उनके इस वादे के पूरा होने से लोगों का ईश्वर पर भरोसा हमेशा के लिए अटूट हो गया। ईस्टर वह दिन है जब सारा दुख एक महान आनंद में बदल जाता है।

कम ही लोग जानते हैं कि ईसाई धर्म में ईस्टर संडे का महत्व गुड फ्राइडे से भी ज्यादा माना गया है। यह पर्व केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं है, यह पापों से मुक्ति पाने और बिगड़ी हुई चीजों को फिर से संवारने का संदेश देता है।

यीशु का पुनर्जीवित होना ईश्वर के प्रेम, उनकी अपार शक्ति और उनके द्वारा किए गए वादों के सच होने का सबसे बड़ा प्रमाण माना जाता है। यही कारण है कि यह दिन दुनियाभर के लोगों को ईश्वर के करीब लाता है और आज के समय में भी उनके भीतर एक सच्ची उम्मीद

जगाता है।

ईस्टर संडे के दिन 'ईस्टर एग्स' को सजाने की बहुत ही अनूठी और पुरानी परंपरा है। ईस्टर के पूरे वीक में मीट और अल्कोहल से पूरी तरह परहेज किया जाता है, लेकिन अंडों को रंगने की शुरुआत आज से नहीं, बल्कि 13वीं शताब्दी से हुई थी। उस समय मुर्गियों के अंडों को बेहद पवित्र माना गया और उन्हें एक नई शुरुआत के प्रतीक के रूप में रंगा जाने लगा।

अंडों को सजाने के पीछे एक बेहद खूबसूरत सोच छिपी है। दरअसल, जिस तरह एक अंडे के कड़े खोल को तोड़कर उसके अंदर से एक नया जीवन बाहर आता है, ठीक उसी तरह यीशु मसीह भी मौत को हराकर कब्र से बाहर आ गए थे।

इस परंपरा में एक पुरानी रूढ़िवादी मान्यता भी शामिल है। इस शाखा को मानने वाले लोग अंडों को विशेष रूप से लाल रंग से रंगते हैं। यह लाल रंग उस पवित्र खून का प्रतीक माना जाता है, जो यीशु मसीह ने सूली पर बहाया था। आज भी दुनिया भर में लोग अंडों को सजाने की इस खूबसूरत परंपरा को पूरे उत्साह के साथ निभाते हैं, जो उन्हें उनके धर्म और इतिहास से जोड़े रखती है।

नासा ने आर्टेमिस II मिशन से जारी की पृथ्वी की खूबसूरत तस्वीरें, 'ब्लू मार्बल' पर दिखी ऑरोरा लाइट्स

वॉशिंगटन, 04 अप्रैल।

अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने अपने ऐतिहासिक आर्टेमिस II मून मिशन के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों द्वारा ली गई पृथ्वी की पहली शानदार तस्वीरें जारी की हैं। इन तस्वीरों में 'ब्लू मार्बल' यानी हमारी पृथ्वी बेहद खूबसूरत दिखाई दे रही है।

नासा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इन तस्वीरों को पोस्ट करते हुए लिखा, "पिछले 54 सालों में हमने बहुत लंबा सफर तय किया है, लेकिन एक चीज नहीं बदली और वो है अंतरिक्ष से हमारा 'घर' यानी पृथ्वी जो बेहद खूबसूरत दिखता है।"

नासा ने दो तुलनात्मक तस्वीरें साझा की हैं। इनमें बाईं ओर की तस्वीर 1972 में 'अपोलो–17' मिशन के चालक दल द्वारा ली गई थी, जबकि दाईं ओर की तस्वीर 'आर्टेमिस–II' के अंतरिक्ष यात्रियों ने कल ही कैमरे में कैद की है। ये तस्वीरें स्पेसक्राफ्ट के अंदर से ली गई पहली इमेज हैं। आर्टेमिस II मिशन के कमांडर और नासा के अनुभवी एस्ट्रोनॉट रीड वाइजमैन ने ट्रांसलूनर इंजेक्शन बर्न पूरा करने के बाद ओरियन अंतरिक्ष यान की खिड़की से ये तस्वीरें लीं। एक तस्वीर में पृथ्वी सूर्य को ढकती नजर आ रही है, जिससे उत्तर और दक्षिण दिशा में दो 'ऑरोरा' (ध्रुवीय ज्योति) की चमक दिखाई दे रही है। इसके साथ ही, दाईं ओर नीचे की तरफ 'जोडिएकल लाइट' भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है।

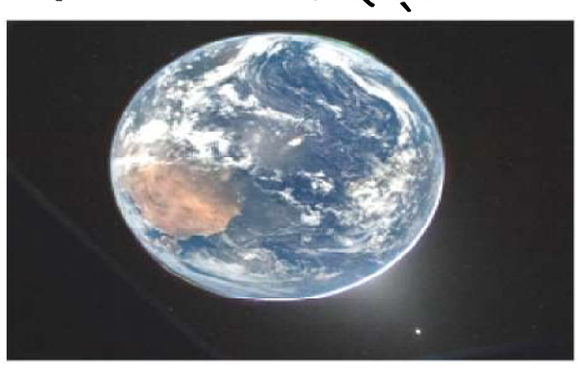

दूसरी तस्वीर में पृथ्वी घने बादलों से घिरी हुई दिख रही है। जैसे–जैसे स्पेस क्राफ्ट आगे बढ़ रहा है, पृथ्वी धीरे–धीरे दूर होती हुई प्रतीत हो रही है। इस समय क्रू पृथ्वी से लगभग 90,000 मील (लगभग 1.45 लाख किलोमीटर) दूर है और चंद्रमा की ओर बढ़ रहा है।

आर्टेमिस II मिशन में चार एस्ट्रोनॉट्स शामिल हैं, इनमें तीन अमेरिकी (रीड वाइजमैन, विक्टर ग्लोवर और क्रिस्टीना कोच) व एक कनाडाई (जेरेमी हैनसन) शामिल हैं। यह मिशन 1972 के बाद पहला ऐसा मिशन है जिसमें मानव चंद्रमा के चारों ओर चक्कर लगाने जा रहे हैं, लेकिन चंद्रमा की सतह पर नहीं उतरेंगे। क्रू ओरियन कैप्सूल में बैठकर चंद्रमा के फार साइड से गुजरेंगे और फिर पृथ्वी पर वापस लौट आएंगे।